कहानी उद्दु
उद्बिलाव की

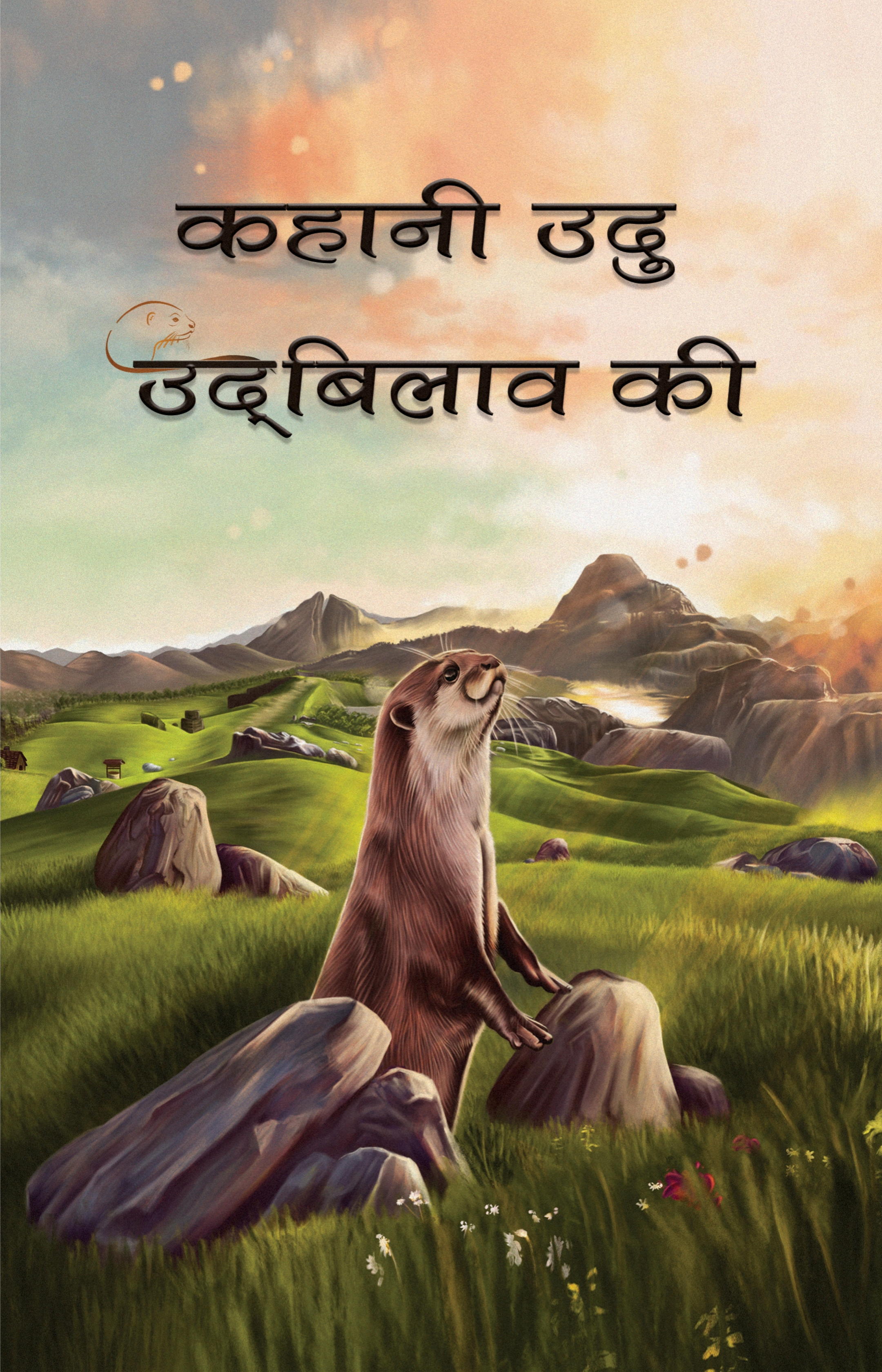

कहानी उदु उद्बिलाव की

संध्या जोशी
रूचि बडोला
एस. ए. हुसैन

कहानी उदू उद्‌बिलाव की
2023

गंगा की स्वच्छता के लिए गंगा नदी के बेसिन में जलीय जीवों के संरक्षण एंव पारिस्थितिकी सेवाओं के रखरखाव के लिए नियोजन एवं प्रबन्धन

परियोजना अन्वेषक
रुचि बडोला एवं सैयद एनुल हुसैन

© जलीय जीव संरक्षण अनुश्रवण केंद्र भारतीय वन्यजीव संस्थान देहरादून

यह पुस्तिका जल शक्ति मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के अंतर्गत परियोजना "गंगा की स्वच्छता के लिए गंगा नदी के बेसिन में जलीय जीवों के संरक्षण एंव पारिस्थितिकी सेवाओं के रखरखाव के लिए नियोजन एवं प्रबन्धन" द्वारा निर्गत की गई है।

लेखिका
संध्या जोशी

प्रारूप
महेशानन्द पांडे, अमन उनियाल

इलस्ट्रेशन
अमन उनियाल

उद्धरण
डब्लूआइआई जीएसीएमसी (2023)। कहानी उदू उदबिलाव की। गंगा एक्वालाइफ कन्जर्वेशन मॉनिटरिंग सेंटर, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून, भारत। पी.पी 34

भारतीय वन्यजीव संस्थान,
चन्द्रबनी देहरादून – 248002, उत्तराखण्ड, भारत

उदबिलाव

प्यारे बाल गंगा प्रहरी दोस्तों हम आपके लिए लेकर आये हैं गंगा की जैवविविधता पर आधारित बाल कहानी पुस्तिका की एक और कड़ी "कहानी उदू उदबिलाव की"। क्या आपने कभी नदी के मुहानों पर रहने वाले इन शैतान नन्हें प्यारे जीवों को पानी में अठखेलियां करते या उछल कूद करते देखा है? ये उन्हीं जीवों की कहानी है जो देखने में कुछ–कुछ नेवले जैसे होते हैं लेकिन नेवले जमीन पर रहते हैं और शिकार करते हैं और उदबिलाव नेवले से कुछ बड़े और पानी में रहना, खेलना और शिकार करना पसंद करते हैं। इस कहानी से आप सब जान पाओगे कि पानी में रहने वाले ये उदबिलाव एक नदी की जैवविविधता बनाये रखने में किस प्रकार सहायक होते हैं। आपकी जानकारी के लिए बता दें कि उदबिलाव एक स्तनपाई प्राणी है। संसार में उदबिलाव की 13 प्रजाति पाई जाती है और हमारे देश में केवल तीन प्रकार के उदबिलाव पाये जाते हैं। जिनके विशय में आपको पुस्तिका के अंत में जानकारी दी जायेगी। ये नदी झील तथा समुद्र के किनारों पर पाये जाते हैं। इनका आकार तीन से पांच फुट तक होता है। इनका वजन 7 से 11 किलोग्राम तक होता है तथा लम्बाई सिर से पूंछ तक 59 से 64 सेमी. होती है। विभिन्न प्रकार के भौगोलिक परिवेशों तथा बनावट के आधार पर इन्हें

अलग–अलग नाम दिये गये हैं। उदबिलाव आप लोगों के समान ही खेल पसंद करता है और पानी में मछलियों की तरह तैर सकता है। ये प्रायः समूह में रहते हैं और घेरा डाल कर मछलियों का शिकार करते हैं। लेकिन ये पानी की चिड़िया, घोंघे, तथा कीड़े मकोड़ों से भी अपना पेट भरते हैं। मादा मार्च से अप्रैल में दो से तीन बच्चों को जन्म देती है। जिनकी आंखें पैदा होने के कुछ दिनों के बाद खुलती हैं।

समुद्री उदबिलाव जमीन पर बहुत कम आते हैं और प्रायः अपनी अगली टांगों को सीने पर रख कर चित होकर तैरते हैं।

हमारी लगातार कोशिश रही है कि रुचिकर कहानियों के माध्यम से हम अपने बालगंगा प्रहरी दोस्तों को एक नदी की जैवविविधता तथा उसमें रहने वाले जलीयजीवों के विशय में रोचक तथा मनोरंजक तरीकों से जानकारी दे पायें। जिससे बच्चे एक नदी तथा उसमे रहने वाले जीवों के प्रति जागरूक एवं संवेदनशील बन सकें, एवं नदी की जैवविविधता तथा पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत बनाये रखने में एक जिम्मेदार बाल गंगा प्रहरी के रूप में भूमिका निभाने में भागीदारी सुनिश्चित कर सकें। आइये तो शुरू करते हैं कहानी उदू उदबिलाव की।

संध्या जोशी
रूचि बडोला
एस. ए. हुसैन

उदू उदबिलाव

नदी के किनारे सरकंडे की झाड़ के पीछे के पथरीली जमीन में उदू उदबिलाव का परिवार रहता था। परिवार में बच्चों समेत करीब दस सदस्य थे। जो कि दिन भर नदी के ठंडे साफ पानी में अठखेलियां करते। परिवार के बड़े सदस्य, मछलियां, कीड़े, केकड़े और छोटे जलीय पक्षियों का शिकार करते और परिवार के अन्य सदस्यों के लिए खाने का इन्तजाम करते। बच्चे केवल मस्ती करते। कभी छोटे–मोटे कीड़े मकोड़े पकड़ते और अपने हुनर का प्रदर्शन घर के बड़े सदस्यों के सामने करते और भााबासी पाते। पानी में तैर कर जब सब थक जाते तो रेत के किनारे टीलों पर धूप सेकते आराम करते। उदू को अपने परिवार, अपनी नदी से और उसके ठंडे साफ पानी से बहुत प्यार था। नदी में खाने की कोई कमी नहीं थी, भरपूर मछलियां थीं। उदू जरूरत के मुताबिक मछलियां पकड़ता और

बच्चों को भी भोजन की अहमियत समझाता। बच्चे सब जानते थे कि उन्हें बिना जरूरत खाना बरबाद नहीं करना है। बच्चे अपने बड़ों की बात मानते और खाना केवल उतना ही मांगते जितनी उन्हें भूख होती। मछलियों के अतिरिक्त वो छोटे कीड़ों और केकड़ों का शिकार करते। केकड़े पकड़ते समय उन्हें विशेष सावधानी की हिदायत घर के बड़े सदस्यों द्वारा दी जाती। उदू परिवार का सबसे बड़ा सदस्य था इसलिए परिवार की सुरक्षा की और नियमों को बनाये रखने की जिम्मेदारी उसी के ऊपर थी। नौनी की जिम्मेदारी बच्चों की थी, बच्चों को किस प्रकार प्रशिक्षित किया जाना है वो बखूबी जानती थी।

सूर्य की पहली किरण के साथ उदू की आँख खुली। उसके कानों में किसी के गाने की मधुर आवाज सुनाई दी। उसने सुनने की कोशिश की कि आवाज किस दिशा से आ रही है। वो अलसाया सा अपने बिस्तर से उठा और बाहर आकर अंगड़ाई ली। नदी की ओर से आने वाली ठंडी हवा ने उसके शरीर में स्फूर्ति भर दी। उसने हाथ जोड़ कर उगते सूर्य को प्रणाम किया। लेकिन नदी की ओर से लगातार आने वाली मधुर गाने की आवाज मानो उसे बरबस खींचे जा रही थी। उदू आवाज की दिशा में चल पड़ा।

सामने ही पेड़ पर एक
पंछी गाना गा रहा था!
उदू ध्यान से सुनने लगा।

मौसम है सुहाना,
नदिया का किनारा,
चलती हैं ठंडी हवायें
आओओ साथी
आओ चलो गीत गायें
प्रकृति का अभिनंदन
मिलकर करें हम
अपना ये फर्ज निभायें
आओ ओ साथी
आओ सभी गीत गायें
चूं–चूं चीं–चीं चूं–चूं
चीं–चीं

उदू – आहा ! कौन हो तुम ? कहां से आये हो जितने सुन्दर हो उतना ही सुन्दर गाते हो, दोस्त !

चिड़िया – मेरा नाम नीलू नीलकंठ है। तुम कौन हो ?

उदू – मेरा नाम.... मेरा नाम उदू उद्बिलाव है।

नीलू – उद्बिलाव ..... ! तुम क्या नेवले हो ?

उदू – नहीं मैं उद्बिलाव हूं। मेरी शकल नेवले से मिलती है लेकिन मैं तो उद्बिलाव हूं। क्या तुमने कभी उद्बिलाव नहीं देखे हैं?

नीलू – हो सकता है, देखे हों पर मैं तो उनको नेवला ही समझता था।

उदू – तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?

नीलू – मैं यहाँ मछली पकड़ता हूं पास ही मेरा घोंसला है। वहाँ मेरे छोटे बच्चे हैं मैं उनके लिए छोटी–छोटी मछलियाँ ले जाता हूं।

उदू – हैं .... मछली ? क्या तुम भी मछली खाते हो ? तभी मुझे कुछ समय से लग तो रहा था कि मछलियाँ आखिर कम क्यों हो रही हैं। अरे........कहाँ हो सब सुनो –सुनो हम जिस को कई दिनों से ढूंढ रहे थे वो आज मिल गया..।

नीलू – अरे ...अरे उदू भाई ये क्या गजब कर रहे हो सब को क्यों बुला रहे हो। अरे भइया नदी तो हम सब की माँ है हम सब का पालन वही तो करती है। माँ पर उसके हर बच्चे का हक बराबर का होता है। आप तो समझदार हो। फिर ये सब क्यों कर रहे हो।

उदू – अरे तुम अगर इस जगह पे ही मछलियाँ मारोगे तो मछलियाँ कम नहीं हो जायेंगी।

नीलू – कम कहाँ से हो सकती हैं भैया हमारी प्यारी नदियों को हम सभी का बहुत खयाल है। उनकी कृपा से ये परेशानी कभी नहीं होगी।

उदू – हां वो तो ठीक है लेकिन मैं अपने परिवार से पूछ कर बताउंगा कि तुम यहाँ पर से अपना खाना ले सकते हो या नहीं।

नीलू – ठीक है ! तुम बात कर लो लेकिन मेरे लिए यहां से दूर मछली मारने जाने में दिक्कत हो जायेगी। मेरा पास ही घोंसला है जिसमें मेरे छोटे–छोटे बच्चे हैं। और यदि मैं उनसे दूर गया तो कोई उन्हें नुकसान पहुंचा सकता है।

उदू – तुम कल आना मैं तब तक अपने परिवार से सलाह ले लेता हूं।

उदू पास के टीले पर धूप सेक रहे अपने परिवार के पास गया, और अपनी पत्नी नौनी से नीलू के बारे में बताया। उसने ये भी बताया कि नीलू अपने बच्चों के लिए उनके घर के पास की नदी में ही मछलियाँ मारता है। हमें क्या करना चाहिये।

नौनी – हम नीलू को नदी से मछलियाँ मारने से नहीं रोक सकते। ये उसका अधिकार है। वो भी तो हमारी तरह नदी की मछलियों पर ही तो निर्भर है। जिस प्रकार हमारा परिवार नदी की सेवा ले रहा है वैसे ही नदी के आस पास या नदी में रहने वाले और जीवों का जीवन भी नदी से ही चलता है। हमें कोई हक नहीं है कि हम किसी के अधिकार का हनन करें।

उदू – हां ! बात तो सही है तुम्हारी, मैं ही थोड़ा स्वार्थी हो रहा था। नदी पर सचमुच सब का अधिकार है।

उदू नदी के किनारे गया और नदी को निहारते हुए सोचने लगा कि आह ! नदी कितनी सुंदर हैं और नदी का विशाल विस्तार कितना अदभुत है। वास्तव में अगर नदियाँ नहीं होतीं तो इस संसार का क्या होता। हमें इतने हरे–भरे जंगल और प्राणों की रक्षक प्राणवायु स्वच्छ हवा कहाँ से मिलती? हम जैसे जीव, जिनका जीवन नदी के सहारे ही चलता है उनका क्या होता?नदियाँ पूरे संसार को कितना कुछ देती हैं। लेकिन हम नदियों को क्या दे पाते हैं? और जो अब नदियों की हालत हो रही है उसके बारे में कौन चिन्ता करता है? उदू के मन में नदी को दूर–दूर तक निहारते हुए अनेकों प्रश्न उमड़ घुमड़ रहे थे। नदी का कल–कल करता पानी मानों उसे कोई मीठा संगीत सुना रहा था।

इसी संगीत को सुन–सुन कर तो वो इतना बड़ा हुआ है। लेकिन आज नीलू से हुई मुलाकात ने उसे कुछ और भी सोचने को मजबूर कर दिया। उदू सारी रात तारों को निहारते हुए नदी की गोद में तैरता रहा, और सोचता रहा कि आज तक उसे क्यों लगता रहा कि नदी पर केवल उसका और उसके परिवार का एकाधिकार है। जबकि आज नीलू से मिलकर ये बात पता चली कि केवल हम ही नहीं हम जैसे हजारों जीव नदी पर निर्भर करते हैं। और नदी की जैवविविधता भी उनसे ही तो बनी रहती है। हमसब उसी का तो हिस्सा हैं। नदी की जैवविविधता बनाये रखने के लिए हम सभी जीवों का अपना–अपना योगदान होता है।

और नदी...... ओह नदी.... नदी हमारा जीवन है हमारी जीवन रेखा। नदियाँ हैं तो सब कुछ है। अगर नदियाँ ना होंगी तो.... तो क्या होगा ? हां ये तो हम सब को सोचना ही होगा। नदियों को सुरक्षित रखने के लिए हम सब क्या कर सकते हैं ? क्या हमें मछलियां कम पकड़नी होंगी ? या हमे अपनी खान–पान की आदतों में बदलाव लाने की आवश्यकता है, क्योंकि जिस तरह से मछलियों का दोहन किया जा रहा है एक दिन तो ऐसा जरूर आयेगा जब कि मछलियाँ नदियों से खत्म हो जायेंगी। ओह....ये बहुत भयानक होगा हमारा तो अस्तित्व ही खत्म हो जायेगा। लेकिन यदि हम मछलियाँ नहीं खायेंगे तो क्या खायेंगे ? मछलियाँ हमारे भोजन का अहम्

हिस्सा हैं। और नीलू....... नीलू बेचारे की भी तो भोजन के लिए मछलियों पर ही निर्भरता है। मुझे ये बात समझनी चाहिये थी। हां नदी नीलू की भी उतनी ही है जितनी कि हमारी या हम सब की। मेरी प्यारी नदी हम सब तुमसे प्यार करते हैं।

भोर के तारे के उगने के साथ ही सारी रात उनींदे उदू की आँख लग गई। सुबह के उगते सूरज के साथ उदू के कानों में कहीं दूर से वही कल वाली मधुर आवाज सुनाई दी उदू को लगा कि शायद वो सपने में ये सब देख रहा है लेकिन लगातार गाने की आवाज से उसकी एक झटके में आंख खुली उसने सोचा कि अरे ये तो नीलू नीलकंठ है। उदू ने अपनी माँद से बाहर सिर निकाला तो देखा कि आसमान में सूरज की लालिमा फैल चुकी

है। वो जल्दी से बाहर निकला और दौड़ पड़ा उस पेड़ की ओर जहां नीलू कल मिला था। पेड़ की ओर देखा तो नीलू अपनी चिरपरिचित आवाज में पेड़ की शाख पर बैठ कर मगन हो कर गीत गा रहा था। उदू ने नीलू को आवाज दी,...,

नीलू – आहा उदू भाई! क्या अपने परिवार से आपने पूछ लिया। क्या बोला उन्होंने ?

उदू – नीलू भाई मैंने अपनी पत्नी से इस विषय मे बात की मेरी पत्नी का मानना है कि नदी पर हम सबका बराबर का अधिकार है। बस हमें अपनी नदी का ध्यान रखना होगा ताकि उसकी जैवविविधता और पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान ना पहुंचे।

नीलू – भइया हम जीव इस बात को भली भांति जानते हैं कि अपनी प्यारी नदियों को किस प्रकार हानि पहुँच सकती है। बस ये बात जरा इन्सानों को समझ में आ जाये तो इस जगत का कल्याण हो जाये। आप सबका मै बहुत आभारी रहुँगा यहाँ पर मछलियाँ पकड़ने से मैं अपने घोंसले के नजदीक रह कर अपने बच्चों का ध्यान भी रख पाउंगा।

उदू – तुम्हारा स्वागत है नीलू भाई। ये हमारा भी सौभाग्य होगा कि हम रोज प्रातः तुम्हारा मधुर गीत सुन पायेंगे। चलो इसी खुशी में एक गीत हो जाये।

नीलू – नदियों के हम पर हैं जो उपकार!
नहीं हम कभी उसे पायेंगे उतार!
लेंगे हम जन्म चाहे हजारों बार!
ओ प्यारे साथियों चलो करें ये विचार!
क्यू ंना हम सभी बनें समझदार!
सभी मिलकर ये शपथ लें बारम्बार!
नदियों को संरक्षण से लेंगे हम संवार!

उदू – वाह नीलू भाई तुम इतना अच्छा कैसे गा लेते हो। और कितनी ज्ञान वर्धक बातें हैं तुम्हारे गीतों में। हमें ये सब अपने बच्चों को जो कल का भविष्य है, बतानी चाहिये। मै जा कर अपनी पत्नी नौनी को ये सब बतलाता हूं। अच्छा नमस्ते ! मिलते हैं फिर।

नीलू – नमस्ते उदू भाई। आप से मिलकर अच्छा लगता है। हमारी मित्रता यूं ही बनी रहे। मिलते हैं फिर दोबारा।

उदू नौनी के पास जा कर –

उदू – नौनी क्या तुमने कभी सोचा है। कि ये नदियाँ नहीं होंगी तो क्या होगा ? हम जैसे जीव जो कि नदी पर ही आश्रित हैं उनका क्या होगा ?

नौनी – उदू ये तो वास्तव में सोचने का विषय है कि हमारे आने वाली पीढ़ी यदि सचेत नहीं होगी तो उनका जीवन कैसे चलेगा। हमें इस पर विचार करना होगा। हमें अपने बच्चों को सिखाना होगा कि एक नदी का हमारे जीवन के लिए क्या महत्व है।

उदू – नौनी अब वक्त आ गया है कि हम बच्चों को ये सिखायें कि हमें प्रकृति तथा प्रकृति प्रद्धत उपहारों को किस प्रकार संरक्षित करना है। चलो चल के देखें कि वो क्या कर रहे हैं।

नौनी – वो शायद नदी के किनारे खेल रहे होंगे चलो वहीं चल कर देखते हैं।

आज कल वो अपना खाना खुद से ढूंड रहे हैं। मछलियाँ पकड़ना और पानी में रहने की कला सीख रहे हैं। यही समय है जब उनको शिक्षित किया जाना चाहिये।

नौनी पास के टीले पे खेल रहे अपने नन्हें उद्‌बिलाव बच्चें डब्बू के पास गई। डब्बू ने माँ की ओर देखा और फिर खाने में मगन हो गया।

नौनी – डबबू तुम क्या कर रहे हो बेटा यहां आओ मुझे तुमसे कुछ बात करनी है।

डब्बू माँ की बात अनसुनी कर मजे में मछली खाता रहा और जब उसका मन भर गया तो बची मछली उसने पानी में ही छोड़ दी। अपने मुँह को साफ करते हुए उसने माँ की ओर देखा। और बोला–

माँ ! मजा आ गया मछली खाने में। अहा जीवन के दो ही मजे हैं खेलो और खाओ।

नौनी – ये सब तो ठीक है डब्बू हम उद्बिलाव को खेलना बहुत पसंद है। पर जीवन को बेहतर तरीके से जीने के लिए काम भी तो करना पड़ता है! और अब समय आ गया है कि तुम्हें अपना काम खुद करना चाहिये।

डब्बू – पर माँ मेरे साथ के सारे बच्चे तो यही करते हैं।

नौनी – हाँ बेटे अब तक तुम सब छोटे बच्चे थे लेकिन अब बड़े हो रहे हो। अब तुम्हें खुद ही अपने लिए भोजन की तलाश करनी चाहिये। सन्नी चाचा कब तक तुम्हें मछलियाँ मार कर खिलायेंगे? एक दिन तो तुम्हें खुद से ये काम करना होगा ना ?

डब्बू लपक कर माँ की गोद में चढ़ गया और बोला।

डब्बू – पर माँ मैं कैसे मार पाउँगा मछली? मछली तो बहुत तेजी से तैरती हैं। मैं जब भी पकड़ने की कोशिश करता हूँ हाथ से फिसल जाती हैं।

नौनी ने प्यार से डब्बू को गले लगाते हुए कहा–प्यारे डब्बू तुम धीरे–धीरे सब सीख जाओगे।

शुरूआत में थोड़ी दिक्कत होती है किंतु समय के साथ शिकार करना सीख जाओगे। केवल शिकार ही नहीं शिकार करने के नियम भी सीख जाओगे।

डब्बू – शिकार के नियम भी होते हैं क्या माँ ? क्या सभी उन नियमों का पालन करते हैं ?

नौनी – हां सबको ही करना होता है। अब तुम्हें अपने पिताजी और चाचा के साथ जा कर ये सब सीखना होगा, तब तुम्हें सब समझ आ जायेगा कि अगर हम ने इन नियमों का पालन नहीं किया तो नदी के पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन बिगड़ जायेगा।

डब्बू – माँ मैं पिताजी और चाचा के साथ नहीं जाऊँगा मैं अकेले मछलियाँ पकड़ुंगा ।

नौनी – बेटे तुम अकेले शिकार नहीं कर पाओगे। सभी उद्बिलाव मिलकर शिकार करते हैं। और हमेशा से ऐसा ही करते आये हैं।

डब्बू – पर मां उद्बिलाव मिलकर घेरा बना कर शिकार क्यों करते हैं।

नौनी – डबबू इससे दो फायदे होते हैं। पहला तो ये कि घेरा बनाकर मछलियां आसानी से पकड़ी जाती हैं और दूसरा समूह में रहने से खुद के शिकार बनने का खतरा कम रहता है।

डबबू – खुद शिकार बनने का ? क्या हमारा भी कोई शिकार कर सकता है मां ?

नौनी – हां डब्बू जिस प्रकार हम अपने से छोटे जीवों का का शिकार करते हैं और अपना पेट भरते हैं उसी प्रकार हमसे बड़े जीव भी हमारा शिकार कर सकते हैं। और यही नहीं हमारी खाल की वजह से इंसान भी हमारा शिकार करते हैं। जिससे कि हमें हमेशा सावधान रहना पड़ता है। और समूह में रहने से ये खतरे कम हो जाते हैं।

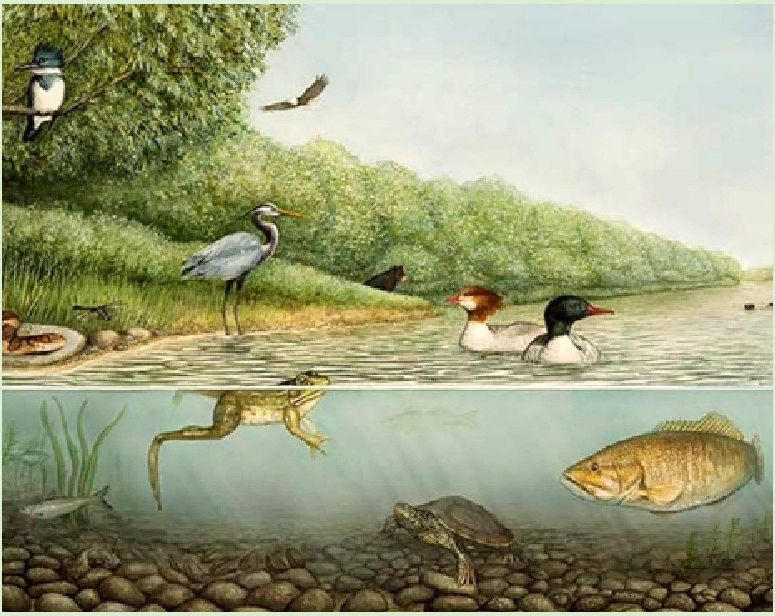

डब्बू – हां ये तो मैंने सोचा ही नहीं। आप कुछ बता रही थीं कि नदी का पारिस्थितिकी तंत्र होता है। वो क्या होता है माँ ?

नौनी – डब्बू मेरे बच्चे नदी में रहने वाले सारे जीव जंतु पेड़ पौधे जो भी होते हैं उनमें जो विविधता होती है उसे जैवविविधता कहते हैं। और वो सब एक दूसरे पे निर्भर होते हैं इस पूरे तंत्र को पारिस्थितिकी तंत्र कहा गया है।

डब्बू – माँ नियमों का पालन ना करने से पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन कैसे बिगड़ेगा।

नौनी – प्यारे डब्बू तुम्हारे जीवन का पहला सबक है कि तुम्हें अपनी प्यारी नदी के विषय में सब कुछ जानना जरूरी है। नदी हमारा जीवन है और वो हम सब की पालनहार है। और नदी में रहने वाले प्रत्येक जीव का पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत बनाये रखने में अहम् योगदान है।

डब्बू – माँ मुझे नदी के पारिस्थितिकी तंत्र के बारे में सब कुछ जानना है। प्लीज मुझे विस्तार से बताओ ना

नौनी – हां डब्बू..... नदी में रहने वाले हम सभी जलीय जीवों को इस आपसी सम्बंध के विषय में जानना चाहिये।

इसके विषय में जानना और नदी के तंत्र को समझना हमारे जीवन का पहला सबक हालांकि वक्त और अनुभव के साथ सभी जान जाते हैं कि नदी में रहने के क्या नियम होते हैं। और हम किस प्रकार प्राकृतिक रूप से एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं।

डब्बू – माँ क्या हमारे अलावा पानी में रहने वाले और जीव भी मछलियाँ या कीड़े खाते हैं।

नौनी – हां बेटे हम जैसे बहुत से जीव हैं, जिनके भोजन का मुख्य हिस्सा मछलियाँ ही होती हैं। तुम्हें ये जानकर आश्चर्य होगा कि बहुत से जलीय जीव शाकाहारी भी होते हैं जो नदियों में उगने वाली वनस्पति तथा काई खाते हैं। और कछुए तो शाकाहारी भी होते हैं तथा मांसाहारी भी। नदी तंत्र में जितने भी जीव होते हैं वो चाहे शाकाहारी हों या मांसाहारी वो जलीय तंत्र को स्वस्थ स्वच्छ एवं मजबूत बनाये रखने में बहुत अहम् भूमिका निभाते हैं।

डब्बू – माँ हम सब जलीय जीवों की भूमिका जलीय तंत्र को मजबूत बनाये रखने में अहम् कैसे होती है।

नौनी – डब्बू तुम बताओ कि तुम अपना जीवन कैसे जीते हो? मतलब कि तुम्हारी दिनचर्या क्या रहती है।

डब्बू – मैं...? मैं सुबह उठता हूँ और नदी में जा कर मुँह धोता हूँ। फिर नाश्ते में कोई छोटा मोटा कीड़ा या छोटी मछली खाता हूं। फिर पानी में खेलता रहता हूं और दिन के खाने में जो आप लोग देते हो मछली वगैरह खा लेता हूँ रात तक खाने का ऐसा ही सिल–सिला चलता है।

नौनी – हम्म ! तो फिर ये बताओ कि जो भोजन हम करते हैं जैसे कीड़े–मकौड़े, मछलियाँ आदि वो क्या खाते हैं ?

डबबू – वो ...... (सर खुजाते हुए) मैंने तो ये सोचा ही नहीं कभी। क्या खाते होंगे वो? क्या वो भी हमारी तरह मछलियाँ खाते हैं ? और नदी में इतनी सारी मछलियाँ होती होंगी क्या ?

नौनी – डबबू नदियों में कभी भोजन की कमी नहीं होती। वो हमारा बहुत खयाल रखती हैं बस हम ही उनका ध्यान नहीं रख पा रहे हैं। ये बहुत गहरी बातें हैं धीरे –धीरे तुम समझ जाओगे। चलो सबसे पहले भोजन श्रृंखला की बात करें।

डब्बू – भोजन श्रृंखला वो क्या होता है ?

नौनी – आओ तुम्हें विस्तार से समझाती हूं। मेरे बच्चे... पृथ्वी पे जो भी प्राणी हैं, वो सब या तो शाकाहारी होते हैं या फिर मांसाहारी। शाकाहारी जीव धरती या पानी में उगने वाली वनस्पतियों पर आहार के लिए निर्भर रहते हैं और मांसाहारी अपने से छोटे जीवों का शिकार करते हैं। जिससे ये साबित होता है कि हम सभी किसी ना किसी प्रकार से एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं। और ये निर्भरता ही एक स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करती है।

डब्बू – स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र वो कैसे ? तो क्या फिर नदी के अंदर रहने वाले जीव भी प्रकार इसमें भागीदारी करते हैं ?

नौनी – पारिस्थतिकी तंत्र स्वस्थ तभी रहता है जब प्राकृतिक संतुलन बना रहे। जैसे कि मान लो कि हम मछली या कीड़े खाते हैं, और यदि हम लगातार उनका गलत तरीके से शिकार करें या अत्यधिक दोहन करें तो एक समय आयेगा जब उनकी कमी हो जायेगी तो पारिस्थितिकी तंत्र की एक कड़ी कमजोर हो जायेगी और भोजन की कमी होने लगेगी, जीव भूखे मरने लगेंगे, नदियों का पानी प्रदूषित होने लगेगा। इस प्रकार पूरा संतुलन ही गड़बड़ा जायेगा। हमारी भागीदारी यही हो सकती है कि हम अपने साथ अन्य जीवों का भी ध्यान रखें।

डब्बू – मां मैं समझ गया। हम सभी जीवों का नदी पर बराबरी का हक है। मैंने देखा था नीलू नीलकंठ भी मछलियाँ ही खाता है। और तुमने पिताजी को समझाया था कि उसका भी नदी पर उतना ही अधिकार है जितना कि हमारा।

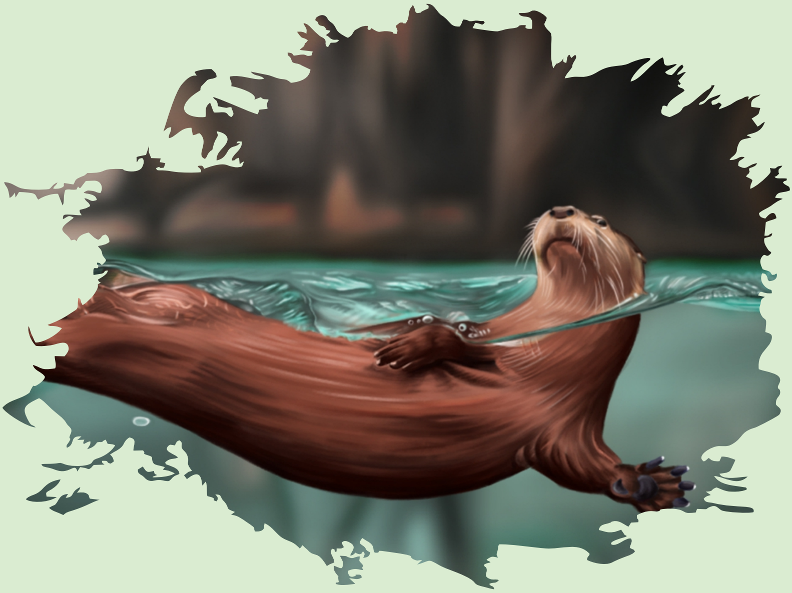

नौनी – डब्बू तुम समझदार बच्चे हो और आगे चल कर एक अच्छे उदबिलाव बनोगे। और मैं उम्मीद करती हूं कि तुम जल्दी ही अपना शिकार खुद से करने लगोगे। शिकार करने की बारीकियां तुम्हें तुम्हारे पिता जी समझा देंगे। जब वो शिकार करते हैं तो उनके साथ रहा करो।

डब्बू – हां माँ मैं एक अच्छा उद्‌बिलाव बनने का प्रयास करूँगा और ध्यान रखुँगा कि मेरे कारण नदी के पारिस्थितिकी तंत्र और पर्यावरण को कोई नुकसान ना पहुंचें। और जितनी आवश्यकता होगी उतना ही भोजन नदी से लुँगा ताकि अन्य जीव के लिए भी भोजन की कमी ना हो।

नौनी – शाबास डब्बू तुम एक समझदार बच्चे हो। उम्मीद करती हूँ कि तुम अपने साथियों को भी ऐसा ही करने के लिए प्रेरित करोगे।

डब्बू – माँ मैं अपने दोस्तों को वो सब बताउँगा जो आपने मुझे सिखाया है। मैं अभी जा कर उनको बताता हूँ। वो सब खेल–खेल में बहुत से कीड़े मकोडों को मारते हैं और बिना खाये बरबाद कर देते हैं।

डब्बू अपने दोस्तों के पास जा कर –

मिक्की, सोनू, कान्हा सब यहाँ आओ। आज मैं तुम्हें कुछ ज्ञान की बातें बताउँगा।

डब्बू के सारे दोस्त पानी में खेलने में मस्त थे। कोई उल्टा तैरता कोई सीधा कोई नदी के किनारे के पत्थरों पर फिसलता दूसरा उसके पीछे फिसलता। उन्होनें डब्बू की बात अनसुनी कर दी। डब्बू अपनी पूरी ताकत लगा कर चिल्लाया।

कान्हा – क्या बात है डब्बू क्यों चिल्ला रहे हो। हमें खेलने क्यो नहीं देते। आओ तुम भी हमारे साथ मजे करो।

डब्बू – दोस्तों आज माँ ने मुझे बहुत सारी ज्ञान की बातें बताईं। और ये सारी बातें तुम सबसे साझा करने को बोला।

कान्हा – अच्छा ! आज तो तुम बड़े ज्ञानी बन गये। जरा हमें भी तो बताओ क्या सीख कर आये हो।

डब्बू – मेरी माँ ने मुझे बताया कि पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत बनाये रखने में हम किस प्रकार सहयोग दे सकते हैं और हमारी क्या भूमिका है।

सोनू – हमारी भूमिका? क्या हम कोई नाटक करने वाले हैं? डब्बू भाई हमें भी बताओ जो मौसी ने तुम्हें बताया है।

डब्बू – अरे बुद्धू भूमिका केवल नाटकों में ही नहीं होती असली जीवन में भी होती है। अब जैसे हम विद्यालय में होते हैं तो एक शिष्य के रूप में होते हैं और हमारे गुरूजन एक शिक्षक की रूप में तो हम अपनी–अपनी भूमिका निभा रहे होते हैं।

मिक्की – और घर मे ?

डब्बू – घर में बेटे की, भाई की, और समाज में एक नागरिक की। अब इसमें तुम कैसी भूमिका निभाना चाहते हो अच्छी या बुरी वो सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण होता है। अच्छे नागरिक की भूमिका में बेहतर समाज का निर्माण करोगे।

सोनू – बहुत गहरी बात कह दी डब्बू दोस्त मेरी माँ भी यही सब कहती है। लगता है आज मौसी ने तुम्हें ये सब सिखाया है।

डब्बू – हां आज माँ ने मुझे एक अच्छे उद्बिलाव की भूमिका के बारे में बताया। और बताया कि हम एक अच्छे उद्बिलाव की भूमिका में रहते हुए कैसे एक नदी के तंत्र को मजबूत एवं स्वच्छ बनाये रख सकते हैं। और समूह में रहने के क्या फायदे होते हैं।

डब्बू ने उन्हें बताया कि उसकी माँ ने उसे समझाया कि हम किस प्रकार नदी के पारिस्थितिकी तंत्र का हिस्सा हैं, और भोजन श्रृंखला क्या होती है। हम किस प्रकार नदी के पर्यावरण और पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत बनाये रखने में अपना योगदान दे सकते हैं। और सबसे अहम् बात कि भोजन की अहमियत समझना। हमारे द्वारा बरबाद किया भोजन किसी अन्य जीव के भोजन का हिस्सा बन सकता था।

सारे बच्चों ने मिल कर ये भापथ खाई कि हम ये बातें अपने अधिक से अधिक साथियों को बतायेंगे। और हम अपनी टोली बना कर सब को जागरूक करेंगे।

आओ ज्ञानी बनें

प्यारे बच्चों आशा है उदू और उसके परिवार की कहानी तुम्हें पसंद आंई होगी। उदबिलाव को इंगलिश में ऑटर कहते हैं। ये एक मांसाहारी स्तनधारीं जीव हैं जो समुद्र, तालाब, झीलों व नदियों के साफ पानी में रहते है। उदबिलाव एक उभयचर प्राणी है यानी जल और थल दोनों में रह सकते हैं। उद्‌बिलाव ऑस्टट्रेलिया एवं एंटार्कटिका को छोड़ कर सभी महाद्वीपों में पाया जाता है। इनके शरीर लम्बे व पतले होते हैं। इनके तेज नाखूनों वाले जालीदार पाँव होते हैं जिनसे उन्हें तैरने मे आसानी रहती हैं। समुद्री उद्‌बिलाव अपने जीवन का अधिकाँश समय पानी में बितातें हैं।

भारत में उद्‌बिलाव की तीन प्रजातियां पाई जाती हैं–

स्मूद कोटेड उद्‌बिलाव
(चिकना पशम उद्‌बिलाव)

स्मूद कोटेड चिकना पशम वाले उद्‌बिलाव भारत में हिमालय के दक्षिण की सभी प्रमुख नदियों में पाये जाते हैं। इनके सिर से शरीर की लम्बाई 59 से 64 से.मी और पूंछ 37 से 43 से.मी होती हैं।

सिर गोल, बाल रहित नाक, पूंछ चपटी तथा अग्रपाद छोटे होते इनके शरीर की खाल मोटी तथा दो परतों में होती है। ऊपर की सुरक्षा खाल निचली परत को पानी में सूखा रखती है जो शरीर की गरमी को बनाये रखने में काम आती है।

नर मादा से बड़ा होता है। ये अगस्त से सितम्बर माह में अपने बच्चों को जन्म देते हैं। मादा उद्‌बिलाव एक वर्ष में 1 से 5 बच्चों को जन्म देती है। ये प्रायः कीड़े–मकोड़े, मेंढक, केंचुए, केकड़े, कछुए, जलीय पक्षियों तथा मछलियों को खाते हैं। मछलियों पर इनकी निर्भरता 75 से 100 प्रतिशत रहती है। यह गर्मियों में नदी के किनारों की वनस्पतियों और आर्द्रभूमि में रहते हैं। इनके प्रमुख आहार मछलियों के अत्यधिक दोहन से भोजन की कमी, निवास स्थलों में परिवर्तन, बांध और अवैध शिकार इस प्रजाति के संकटग्रस्त होने के प्रमुख कारण हैं।

ऑरियन्टल स्मॉल क्लॉड ऑटर/ एशियन स्मॉल क्लॉड ऑटर *(एमब्लॉनिक्स सिनेरस)*

उद्बिलाव की ये प्रजाति दक्षिण हिमालय तथा दक्षिण भारत के तटीय क्षेत्रों में पाई जाती है। इनका सिर चपटा और छोटा, आँखें सिर के सामने, कान छोटे, नाक गुलाबी, तथा खाल मखमली होती है। यह मीठे पानी की झीलों, दलदली वन, नदियों और नहरों में पाये जाते हैं।

ये वर्ष में एक बार 1 से 6 बच्चों को जन्म देते हैं। ये छोटे जीवों और छोटी मछलियों को खाते हैं। मानव प्रेरित आर्द्रभूमि अतिक्रमण, वनों की कटाई, अवैध शिकार, इनके प्राकृतिक आवासों का विनाश इनके अस्तित्व के लिए प्रमुख खतरे हैं।

यूरेशियन ऑटर
(लूट्रा लूट्रा)

यह प्रजाति हिमालय के दक्षिणी–पश्चिमी घाट और मध्य भारत में पाई जाती हैं। इनका शरीर लंबा पूँछ मोटी तथा पैर छोटे होते हैं। इनके भूरे रंग के घने छोटे बालयुक्त खाल, झिल्लीदार पैर और और थूथन में कड़े बाल होते हैं। यह प्रजाति झीलों, दलदली जंगलों, और नदियों के तटीय क्षेत्रों में रहती है। ये वर्श में एक बार 1 से 4 बच्चों को जन्म देते हैं। यह मछली, मेंढक, कीड़े–मकोड़े व पक्षियों को खाते हैं। नदियों में बांध निर्माण, विकासात्मक गतिविधियां, जलीय भूमि पर खेती, अवैध शिकार, जल प्रदूषण खेती में रासायनिक खादों का उपयोग इनके प्रमुख खतरे हैं।

NOTES

NOTES

NOTES

नमामि गंगे

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

NMCG
National Mission for Clean Ganga,
Department of Water Resources, River Development & Ganga Rejuvenation,
Ministry of Jal Shakti, Major Dhyan Chand Stadium, India Gate, New Delhi - 110001

Wildlife Institute of India
Chandrabani, Dehradun-248001, Uttarakhand
t.: +91135 2640114-15,+91135 2646100, f.: +91135 2640117

GACMC
Ganga Aqualife Conservation Monitoring Centre
Wildlife Institute of India, Dehradun
nmcg@wii.gov.in

www.wii.gov.in/national_mission_for_clean_ganga